सं० ग्रो०वि०/ग्रम्बाला/ 37-87/22236 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० 1. उनायुक्त, ग्रम्बाला,
• 2. प्रशासक, नगरपालिका, ग्रम्बाला शहर, के श्रमिक श्री ग्रजैब राम, पुत्र श्री मामराज, मकान नं० 2243/2, नजदीक हरि
पैलेंस, ग्रम्बाला शहर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधागिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हंतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसेलिये, ग्रव, ग्रीचोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री अर्जव राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनाँक 12 मई, 1987

सं० श्रो० वि०/गुड़गांव/14-87/18264.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० इण्डो स्विस टाईम लि० डुण्डाहेड़ा, गुड़गांव के श्रमिक श्रो जगदीश राम, पुत श्री झण्डू राम मार्फत श्री राव पृथ्वी सिंह यादव, लेवर ला एडवाईजर, शांति नगर निवट नैशनल हाई वे नं० 8 गुड़गांव तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाँछनीय समझते है;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपबारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याययनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री जगदीश राम श्रमिक कार्य से स्वयं गैरहाजिर है या उस की सेवाओं की समाप्ति प्रवन्धकों द्वारा की गई है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फ़लस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

स० स्रो०वि०/गुड़गांव/24-87/18271.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० इण्डो स्विस टाईम लि०, हुण्डाहेड़ा, गुड़गांव के श्रमिक श्री चोहल सिंह, पुत्र श्री गोपी सिंह मार्फत श्री राव पृथ्वी सिंह यादव, लेबर ला एडवाईजर, शान्ति नगर, े निकट नैशनल हाई वे नं 8, गुड़गांव तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधित्वना सं० 5415-3 श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री चोहल सिंह श्रमिक कार्य से स्वयं गैरहाजिर है या उस की सेवाश्रों की समाप्ति प्रबन्धकों द्वारा की गई है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फल स्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो० वि०/गुड़ंगांव/7-87/18279. — चूिक हरियाणा के राज्यपाल को राय है कि मैं० इण्डो स्त्रिस टाईम लि० डुण्डाहेड़ा, गुड़ गांव के श्रमिक श्री गजराज सिंह, पुत्र श्री धर्म सिंह वार्फत श्री राव पृथ्वी सिंह यादव, लेबर ला एडवाईजर, शान्ति नगर गिकट नैशनल हाई वे नं० 8, गुड़गांव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके, बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

मीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्गय हेतु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 5415—3-श्रम 68 15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495—जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीखें लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त /मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

वया श्री गज राज सिंह श्रमिक कार्य से स्वयं गैरहाजिर है या उसकी सेवाग्रों की समाप्ति प्रबन्धकों द्वारा की गई है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?